ज़ैनबः बदलते हुए बोलते तेवर

मु0 र0 आबिद

अन्धा बहरा गूँगा लुन्ज अपाहिज (किया हुआ) इतिहास...'राज' धारा का दूध पिलाया, ताज तिगड़म का पाला, साम्राज्य दृष्टि का बन्धा टिका परकटा इतिहास, बुद्धजीवी धर्म के नाम पर सबसे बड़ा बुद्धिभक्षी ज्ञान–तोड़ धबेला भद्दा इतिहास... वह जिसकी लेखनी बिकी हुई, संवेदना जमी हुई, बोध लगाम कसा, बहाव राजहड़प पैरों का रौंदा... वह इतिहास अगर दरबार और महल के बाहर झांके भी तो, हलचल, उधम और विद्रोह छोड़ उसे कुछ न दिखाई दे (उधम के अन्धे को हलचल ही हलचल दिखाई दे।) उस इतिहास की आँख शिष्टाचार, संयम की मूर्ति, शान्ति घूंघट में पर्दे की प्रतिमा हज़रत ज़ैनब (स0) पर पड़ती भी कैसे!! (सूरज भी तो ज़ैनब की एक झलक न देख सका, बाहरी दीवार तक को ज़ैनब की आहट भनक न लगी।) वह तो अपनी माँ स्वर्ग की (पर्देवाली) स्त्री (जनाब सैयदा स0) के पर्दे के उस मानक की थी जहाँ नामहरम (अन्य मर्दों) की आँख से बचना और उनसे अपनी आँख बचाना ध्येय हो, मर्यादा और सुहाग के आंचल की बसी इस बेधब्बे आंचल वाली पाक बीबी की झलक, भनक या आहट तक इतिहास की आँख, कान और बोध की पहुँच का क्या सवाल!! यह भी ध्यान में रहे कि ज़ैनब अपने बाप की पच्चीस बरस की राजनैतिक चुप्पी और बुद्धजीवी तटबास की पाली हुई हैं। वह बाप जो अपने समय के संसार के सबसे बड़े राज का प्रमुख भी हुआ लेकिन 'राज' की बू और साम्राज की बास को जिसने अपने फैली हुई सीमाओं में आने तक न दिया और जिसने 'महल' की हवा को अपने आंगन में झांकने तक दिया (यानि इतिहास को चाव लेने आ अवसर और मनोरंजन का मज़ा न लेने दिया) उस बाप के नियम–संयम में पूरी तरह ढली, शान्तिधारा में बसी, दिखावे से परे बेटी साम्राज और राजनीति के मारे इतिहास को अपने दीदार से लेजाने क्यों लगती। पर जो भी हो, ज़ैनब इतिहास में आ ही गई (लाई गई) और बहुत बड़े रचनात्मक धमाके (Big-Bang) के साथ। ज़ैनब आई, तो इतिहास के धारे को मोड़ गई उसके सत्ताभाव को तोड़ गई, बल के घमण्ड का बल निकाल गई, काल ढल गई। बात केवल यह थी कि ज़ैनब के बोल इतिहास तक पहुँच ही गये और बोल के बदलते तेवरों से –'वादी चकरा गये, इतिहास अचेता चित हो गया'। वे तेवर जो इन्क़िलाब की फसल लगा गये, उगा गये।

ज़ैनब बोलीं तो निर्मलता–केन्द्र माँ की भाषा बोली, नहजुल बलाग़ा (प्रसंगिता–शैली)[1] के प्रवक्ता बाप का लहजा बोला, संचार–चमत्कार नाना की आत्मा बोली, सत्य–रक्षक दादा की धाक बोली, शान्ति, सत्य, यथार्थ के नायक भाईयों की शैली बोली, साम्राजिकता के उचके हुए इस्लाम की कुमुक उठी, दबी दबाई मानवता के जान में जान आई।

(ज़ैनब के यह बदलते तेवर पिघलते चलन की उपज न थे बल्कि चरित्र के और स्वभाव की स्थिरता की पहचान थे।) आईये, इन बोलते तेवरों

(1) हज़रत अली के व्याख्यानों–प्रवचनों, पत्रों और सूक्तियों का एक संग्रह

के बदलते कोणों पर एक आँख डाली जाए:

पहला अंक– कर्बला की शोक रचना के नाम

कर्बला का बन... दिन भर के दुखों और बहत्तर चमकते ख़ून में बसा माहौल – सन्नाटा, सुनसानी... एक ओर जले तम्बुओं से उठता धुवाँ... एक ओर अत्याचार के थके हारे खिसयाने नाच का उधावन... ऐसे में अलग एक कोने में एक दुखियारी, पीड़ाओं की मारी बन्दी, बेचादर कुछ बन्दियों अपने सगों के शोक झुरमुट में धरती पर बैठी कुछ दबे होंटों कहती है। (अब तो ज़ैनब के दबे होंठों के बोल भी सुने जा सकते हैं) अपने नाना से कहती है, गुहार करती है, सहनशीलता की प्रतिमा अपना रोना नहीं रोती, भाई की शोक–रचना कहती है:–

**हाय मुहम्मद स0! आप पर तो आकाश के फरिश्ते (देवता) सलवात भेजते हैं, वरदान देते हैं, और यह आपका हुसैन है अंग अंग टूटे टूटे छिटके पड़े हुए... आपकी बेटियाँ बन्दी... हाय मुहम्मद!*

यह हुसैन (अ0) चटयल बन में पड़ा जिस पर हवा धूल की चादर उढ़ाए हुए है। यह पापी दुराचारी नारियों के कुपूतों का हत्या किया हुआ है, हाय दुख! हाय कसक! ऐ हुसैन! आज तो अल्लाह के रसूल (दूत) नाना मारे गये। ऐ मुहम्मद (स0) के (भले) साथियों! ये सब तो मुहम्मद की सन्तान हैं जो युद्धबन्दियों जैसी फिराई जा रही हैं...

देखिये, ज़ैनब के इन बोलते तेवर में शोक में डूबा आँखों देखा हाल है, बेहाली का बोल है, आँसुओं की तपन है, सहन की चमक है, दुखों की खटक है, कसक है फिर भी शान्ति है कल है, याद है, याद का आधार है।

दूसरा अंक– बाज़ार के उधार का उतार

अब दृश्य बदलता है, अन्याय उत्पीड़न नई करवट लेता है। (नया इतिहास उभरने को मचलता है) कूफा का भरा बाज़ार... दुख हाट... भीड़ की उधाचौकड़ी, भेड़िया मण्डी... अपने पराये आये बुलाये सब...सबके सब अन्याय अत्याचार के साथी, बल के समर्थक, नहीं तो कम से कम बल के नगें नाच के मूकदर्शक (जो नहीं वे अन्धेर की जेलों में राजनैतिक अति की ढली मोटी खोटी सलाख़ों के पीछे) ऐसे में ज़ैनब का स्वतन्त्रा संग्रामी बन्दी दल... रस्सी में जकड़ा, ऊँट की नंगी पीठ पर सवार... नेजों पर चढ़े कटे सरों के जुलूस के साथ बाज़ार पहुँचता है।... यह सर अधिक्तर कूफे वासियों के हैं जिनको यह गलियाँ सड़कें पहचानती हैं... यानी इन सरों से बन्दी दली की पहचान आसान... यहाँ ज़ैनब के बोल फूट पड़ते हैं: लोगों के करतूत बताने को, अत्याचार का अपराध जताने को:

ऐ कूफे वालो! तुम रोते हो!! (रोते भी रहो) तुम्हारे आँसू कभी न थमें! तुम्हारी गुहार कभी न टूटे! (मिसाल में क़ुर्आनी आयत पढ़कर) तुमने भी अपने प्रण तोड़ दिये, अपनी बात से मुकर गये (ज़बान से फिर गये) और अपने मूल नास्तिकता की ओर पलट फिरे। तुममें

* ज़ैनबे के बोल अरबी भाषा में हैं। उनके उर्दू अनुवाद इस लेखक के सामने हैं। यहाँ इन अनुवाद को सरल भाषा में बदला गया है। यदि अनजाने में या अनजाने से अनर्थ हुआ तो अल्लाह क्षमा करे। जानकार लोगों से प्रार्थना है कि यहाँ या किसी भी त्रुटि कमी से अवश्य अवगत कराएँ। आभारी रहूँगा।

बे पर की उड़ाने, अपनी अपनी बघारने, बैर, झूठ, दासियों की चापलूसी और शत्रु जैसे लान्छन लगाने को छोड़ दिया है। तुमने आख़िरत (परलोक) के लिए बहुत बुरा सामान भेजा है। अल्लाह का प्रकोप तुम्हारे लिए है, तुम सदा के लिए अज़ाब दण्ड भुगतोगे।... रोते हो?! बहुत ही रोओ, कम हंसो (हंस कम सको)! (क्यों) तुमने नबूवत (प्रभुसमाचार माध्यम) की मुहर के वंशज, रिसालत (ईशदूतत्व) की खान को मार डाला है (वह) जो लड़ाईयों में तुम्हारा आसरा, तुम्हारी एकजुटता का सहारा, तुम्हारी शन्ति चैन का ठिकाना, तुम्हारे बोल की आस, तुम्हारे आड़े समय आड़े आने वाला, तुम्हारी बातचीत के लिए परामर्शी, तुम्हारे तर्कों का स्रोत, तुम्हारे रास्तों की मीनार (प्रकाश–स्तम्भ/Light House)... (तुमने क्या कर डाला!) क्या ही बुरा तुमने अपने लिये किया (बहुत बढ़ गये, क्या बुरे फंस गये) जिस दिन तुम उठाये जाओगे (क़यामत में) उस दिन के लिए क्या बुरा बोझ उठा रखा है। तुम्हारी नास, तुम्हारी औंधे मुँह गिरन!! क्योंकि तुम्हारे जतन अकारत हुए तुम्हारे हाथ कटे और तुम कंगाल हुए।

तुमने तो वह किया कि आकाश फट न पड़े, धरती चिटक न पड़े...

... (भगवान की ओर से) अपनी ढील छूट पर इतराओ न। उसे जल्दी की क्या पड़ी... प्रभु तुम्हारी ताक में है (उस से बचकर जाओगे कहाँ?)

देखा! बोलते तेवर का रेतीला ढब... सामने अन्याय अत्याचार है और उसके साथी बराती घराती। इनमें अपराध का जताना है झिड़क है, चिथाड़ है, फटकार है, (देखिये, अभी से पिट्टस, मच गई! इसी से कहीं दबी कोई चिंगारी निकलकर बढ़कर क्रान्ति इन्क़िलाब की ज्वाला में बदल रहीं)

तीसरा अंक: अंधेरे के सोते पर सीधा प्रहार – मार ही मार

फिर तो ज़ुल्म अन्याय आगे बढ़ जाता है (अपनी इस फिटकार से ऊब कर और ठिकाने देखने या अपने ठिकाने तक पहुँचने, अपने ठिकाने लगने) ज़ैनब के सहनशील सत्यदल को आगे बढ़ाता है और किसी न किसी तरह अन्धेर सोते तक पहुँचा देता है (कितनी जल्दी अपने डॉन गुरुघन्टाल का पता बता ही नहीं देता उस तक पहुँचा भी देता है। देखा अत्याचार का पेट कितना कच्चा होता है!)

अब दृश्य पूरी तरह बदला है। कर्बला अत्याचार की कार्यशाला या Shooting Ground थी, कूफा अत्याचार के कलंकी कलाकारों और कर्मियों का भर्ती आफिस, जमघट या Studio था और यह शाम ज़ुल्म अन्याय का मुख्यालय Headquarter है, अन्धेर के भारों का जमावड़ा या Black Hole।

यह बोलते तेवर चिताने चिथाड़ को नहीं, सीधे प्रहार को अपनाते हैं, ज़ुल्म से सीधी टक्कर लेते हैं, अत्याचार को धाराशायी चित्त करने को। देखिये, इन तेवरों की जीवटी, अत्याचार के सारे कसबल और सत्ता के सामने:

अल्लाह ने सच कहा: 'फिर तो करतूतियों कुकर्मियों को जो अल्लाह के प्रतीकों को झुटलाते हैं और उनकी खिल्ली उड़ाते थे, उनका बुरा परिणाम हुआ'

ए यज़ीद! तूने हम पर धरती के रास्ते, आसमान के क्षितिज (Horizons) बन्द कर दिये और बन्दी कर फिराया।

तो क्या समझता है अल्लाह के यहाँ हम गिर गये, नीच हो गये और तू बड़ा हो गया, बढ़ गया। तू इस फेर में अकडू घूर रहा है, ख़ुशी के मारे बाहें इतरा–इतरा कर कूल्हे मटका (Twist कर) रहा है... जल्दी न कर! कुछ थम तो सही...

ऐ छुट्टे छोड़े हुए दासों की सन्तान! तूने रसूल की बेटियों को बन्दी किया, उनके मान को मिटाया, उन्हें बेपर्दा किया ... उससे मुँह देखे की भी क्या आशा बन्धे जिसके पुरखों ने पाक लोगों का जिगर चबाया हो और जिसका माँस चमड़ी, शहीदों की पाक सन्तान के ख़ून से पली पोसी हो... (तू अपने पुरखों से चाहता है तेरी पीठ थपथपाएँ) तू बहुत जल्दी... अपने पुरखों से मिलने वाला है. ....तू (क़यामत के दिन) रसूल के आगे अपराधी की तरह लाया जायगा... फिर ईश्वर का न्याय, रसूल मुहम्मद (स0) की दावेदारी और जिब्रील की पैरवी तेरे (दण्ड के) लिए बहुत है। फिर तो तुझे और उसे जिसने तुझे मुसलमानों की गर्दनों पर थोपा है, बहुत जल्दी मालूम पड़ जाएगा कि अत्याचारियों को कैसा बदला (दण्ड) मिलता है और किसका ठिकाना बुरा है और किसके साथी ढीले हैं। .....इस तरह तेरे मुँह लगना मेरे लिए खेद की बात है।

अब ज़ैनब अत्याचार पर अन्तिम अचूक प्रहार करती हैं। जग समझे हुए सूझबूझ वाली ज़ैनब, बेपढ़ाये हुए पढ़ाने वाली ज़ैनब, दर्शन की आँख से अन्याय अत्याचार के कसबल जांचे परखे समझे, सताने के छोटे धुकधुकाते दिल की फुदक का अनुमान किये ज़ैनब अनोखी ललकार देती है:

यज़ीद जितना धोका देना है दे ले, अपने छलबल, जतन से ऊब न, जितना सताना है सता डाल लेकिन याद रख तू हमारी याद हमारी चर्चा को मिटा नहीं सकता. .. तेरे दिन तो गिनती के हैं (हमारे दिन अनन्त हैं)...

देख लिया। दर्शन भरे जियाले बोलते तेवर के बेबाक बहाव, काट, बाढ़, उठान, विश्वास, ईमान, ... जिसने अत्याचार को उसका भाग्य दिखा दिया, मात का हार गले डाल दिया और यह भी जता दिया सत्य सहनशीलता की बात कितनी बड़ी होती है। इन तेवरों के सटीक निशाने का चमत्कार देखिये कि यज़ीद जल्दी ही पछतावे जैसी हूक में जल मरा (यहाँ इस फेर में न रहिये कि यज़ीद का पछतावा सच्चा था। नहीं तो वह 'सत्य' के केन्द्रों मदीना मक्का तक धावा न बोलता। उसने केवल हुसैन अ0 के आगे अपनी हार मानी। सच में यह ज़ैनब के समक्ष उसका इक़बाली बयान था कि बीबी अब तो पीछा छोड़ दीजिये।)

चौथा अंक: देस वापसी–आपबीती बिपता

अब संसार भर की कठिनाइयाँ सहे, कड़े संकटों में आड़े तूफान झेले, चलती फिरती सुनानी बनी, दुखयारी बीबी ज़ैनब अपने देस वापस होती है, भरे दिल, बोझल मन, छलनी जिगर और ख़ून रोती आँखों के साथ। दिलासे की प्यासी ज़ैनब के बोलते तेवर अब बस दुख बताने, विपता कहने तक सिमट जाते हैं। सोग में डूबे यह तेवर शोक रचना करते आँसुओं से उपदेश देते हैं। (हुसैन (अ0) के बाद अब ज़ैनब बड़ी हो गई, अपने घर घराने में और अपना बड़कपन कर्बला से कूफ़ा और कूफ़े से शाम तक निभा भी चुकी):

ग्रन्थ (कुर्आन) से जुड़े रहो और जो इसको पढ़ता है, (हम) अहलेबैत ही ग्रन्थ वाले हैं। मेरे इमाम (धर्मनायक नेता हज़रत अली अ0) ने बचपन की उस आयु में ईश्वर को एक (कहा) जब लोग ठीक से बोल नहीं पाते।

.....(क़यामत में) प्रभु के सामने नबी (मेरे नाना) और वसी अबुतुराब–धरतीपिता (मेरे बाप) मेरी शिफ़ाअत सिफारिश करने वाले होंगे।

.........तफ़ और उसके वासियों पर सलाम और उन समाधि कलशों पर जिन पर प्रभुकृपा होती रहती है। ....तफ़ (कर्बला) में वे पुण्यात्माए सो रहे हैं जिन्होंने जीवन भर (अल्लाह की) भक्ति पूजा तपस्या की, फिर इन बनो घाटियों में सदा को सो रहे। ....यह लोग दीन दरिद्र, भूखे, मरिहल लोगों के लिए सरोवर हुए, अब 'अदन' (स्वर्ग) के बाग़ों की ओर चल बसे। ....ऐ मुहम्मद (स0)! आपकी बेटियाँ बन्दी की गईं ....फिराई गयीं..... रूम के नास्तिक युद्धबन्दियों जैसी..... उनके आंचल मैले धूल भरे थे और चेहरे खुले हुए थे और बरछियों की नोकों (के चुमने से) ख़ून भरे ....हुसैन (अ0) के लिए फुरात (नदी) के पानी की कन्जूसी की गई जो कुत्तों तक के लिए बे रोक टोक था। मेरा मन हुसैन (अ0) के दुख में भुन रहा है और मेरी आँखें उन पर बराबर आँसू बहा रही हैं।

यहाँ बोलते तेवर में शोक रचना बोल रही है, आहें सांस ले रही हैं, सोग का वेग है, रोने की बिलबिलाहट है, दिलासे का बहाव है, टीसन है, तपन है, जलन है, कसक, खटक, चोट है।

अंकों का केन्द्र–बिन्दु

इन बदलते तेवरों के पीछे क्या है?! कुछ देखिये। सामने की बात है सामने के दृश्य बदले, वातावरण बदला, समय दशाएँ बदली, तो तेवर बदले। क्रिया के अनुसार प्रतिक्रिया (Reaction) होती है। तेवर न बदलते तो बोध संवेदना का हल्कापन या आचरण का बिखराव समझा जा सकता था। लेकिन यहाँ आगे बनने वाले प्रभावों से पता चलता है कि बोलते तेवर अवसर और स्थिति को पहचानते हुए बदले, बोध संवेदन के इशारों पर बदले। ये तेवर परिस्थितियों का अनुबोध और अनुमान रखने वाले थे और इतिहास धारा को समझने वाले थे बल्कि उन्हें अपने अनुसार मोड़ लेने की भरपूर क्षमता और सकत रखने वाले प्रभावी कलाकार थे। इन बदलते बोलते तेवरों से व्यक्तत्व की एकाग्रता और युग प्रवर्तक चरित्र उभरता है जो एक झटके से इतिहास में आया, ठहरा और अपने अनमिट अनन्त निशान छोड़ चला जो आगे आने वाली पौधों (Generations) का मार्गदर्शन करते, पालते पोसते रहे।

सलाम बदलते हुए बोलते तेवरों के एकढब, एकरंग जगमगाते चरित्र पर, उसकी डगर, उसके विचार, उसकी दृष्टि पर।

सलाम बदलते हुए बोलते तेवरों के इन्क़िलाबी (क्रन्तिकारी) घोल पर, युग बनाते काढे पर सलाम। सलाम इससे सुधरती मानवता पर।

सलाम बदलते बोलते तेवर के बदलते कोणों पर, इन कोणों में पलते दृष्टिकोणों पर और प्रभावमय दृष्टि पर।

सलाम बदलते बोलते तेवरों के अवसर, बोध, दृश्य–पहचान प्रदर्शन पर, सुधार की दुर्लभता को सलाम, प्रणाम, नमन।

